बन्द–ए–महामारी और पढ़ना–लिखना सीखना

श्रीदेवी

महामारी के चलते हुए लम्बे समय के बन्द से बच्चों में लर्निंग लॉस देखा जा रहा है। प्रस्तुत आलेख में इसी समस्या और इसके समाधान की कक्षा-कक्ष रणनीतियों की चर्चा की गई है। लेखिका का मानना है कि बच्चे जितना जानते थे, उससे ज़्यादा भूल गए हैं, यह नुक़सान केवल 18 महीनों का नहीं है, यह 2 से 3 साल की क्षति के रूप में समझा जाना चाहिए। इसमें भी सभी बच्चों की क्षति में भी विविधता है। वह कहती हैं कि वर्तमान कक्षा के लिए निश्चित पाठ्यक्रम का दबाव, हर बार शिक्षण के लिए नए मानदण्ड और कम समय में बार-बार आकलन करवाने जैसी प्रक्रियाएँ भी शिक्षकों के अध्यापन कार्य का समय कम कर देती हैं। सं.

महामारी के दौरान जान बचाए रखना एक बड़ी चुनौती रही है। इस दौर ने हमारी व्यवस्थाओं की जो पोल खोली है, वह हम सबके सामने है। इस दौर में स्वास्थ्य के साथ-साथ जीविकोपार्जन और शिक्षा भी बहुत अधिक प्रभावित हुई है। जीविकोपार्जन पर लॉकडाउन (बन्द-ए-महामारी) का प्रभाव इस कदर है कि हाशिए पर चलने वाले निजी विद्यालय में पढ़ने वाले लगभग सभी बच्चों का पालकों द्वारा सरकारी विद्यालयों में प्रवेश कराया गया है, जिसके कारण सरकारी विद्यालयों में दर्ज संख्या बढ़ गई है और बच्चे भी अपनी पिछली कक्षाओं की दक्षताओं को या तो भूल गए हैं या उनमें बहुत पिछड़ गए हैं। नतीजतन शिक्षक भी समझ नहीं पा रहे हैं कि कक्षा में काम शुरू कहाँ से करें।

महामारी के दौर में लम्बे समय तक विद्यालय ही बन्द रहे हैं। हालात यह हैं कि कक्षा 6, 7 और 8 में पढ़ने वाले विद्यार्थी भी भाषा के बुनियादी कौशल, पढ़ना और लिखना व चिन्तन करके किसी विषयवस्तु पर बोलना, भी भूल गए हैं या उनमें कमज़ोर हो गए हैं। इसी कारण अब वे कक्षा में शिक्षक की बहुत कम बातों पर प्रतिक्रिया करते हैं।

शिक्षक भी इस ऊहापोह में हैं कि वे कक्षा 6, 7 और 8 में पढ़ने वाले बच्चों को क्या पढ़ाएँ। पाठ्यपुस्तक पढ़ने की स्थिति में बच्चे हैं नहीं। वर्ण, शब्द और मात्राओं को वे पढ़ना नहीं चाहते। यह पढ़ना-लिखना सिखाने का एकमात्र समाधान भी नहीं है। कक्षा की इस चुनौती पर शिक्षकों से कुछ चरणों में चर्चा की गई। मसलन, शुरुआत कैसे करें? योजना कैसे बनाएँ? बच्चों की चुनौतियों को कैसे देखें? या कार्ययोजना में बदलाव कैसे करें?

शिक्षकों से सबसे पहले यही चर्चा की गई कि 18 माह बाद जब स्कूल खुले हैं तो क्या बच्चे वो सारी बातें जानते-समझते हैं जब वे स्कूल नियमित आते थे या बन्द-ए-महामारी से पहले जितना जानते थे। इसपर शिक्षकों ने कहा कि जितना जानते थे केवल वही नहीं बल्कि उससे ज़्यादा भूल गए हैं और यह नुक़सान केवल 18 महीनों का नहीं है, इसे 2 से 3 साल की क्षति के रूप में समझा जाना चाहिए। इसमें भी सभी बच्चों की क्षति में भी एक विविधता

है। कक्षा में बच्चों की इन समस्याओं को हम हर पल देख रहे हैं, पर वर्तमान कक्षा के लिए निश्चित पाठ्यक्रम का दबाव, हर बार शिक्षण के लिए नए मानदण्ड और कम समय में बार-बार आकलन करवाने जैसी प्रक्रियाएँ भी शिक्षकों का कक्षा में अध्यापन का समय कम कर देती हैं।

इस पूरी प्रक्रिया पर बात करते हुए शिक्षकों ने बच्चों की कुछ दिक़्क़तों को बताया। जैसे–

चित्र : प्रशांत सोनी

पाठ को जब हम पढ़कर समझाते हैं तब तो वे उसे समझ जाते हैं, पर जब उनसे पढ़ने के लिए कहा जाता है या किसी प्रश्न का जवाब पूछते हैं या अपने शब्दों में लिखने के लिए कहते हैं तो उन्हें दिक़्क़त होती है। बच्चों को यह दिक़्क़त केवल भाषा विषय के दौरान होती है या विज्ञान और सामाजिक विज्ञान जैसे दूसरे विषय पढ़ते समय भी यह होता है, यह पूछने पर चर्चा में शामिल विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों ने बताया कि इन कक्षाओं में भी बच्चों की यही मुश्किलें हैं। उदाहरण देकर कोई अवधारणा बताने पर तो वे समझ जाते हैं पर जब उन्हें पढ़ने के लिए कहते हैं, वे बचने की कोशिश करते हैं।

कक्षा की तस्वीर

बच्चों की इन मुश्किलों को देखते हुए यह समझने की कोशिश की गई कि क्या कक्षा के सभी बच्चों की यही दिक़्क़त है या इसमें कोई विविधता भी है। इसपर शिक्षकों ने कहा कि 6 से 7 बच्चे ऐसे हैं जो थोड़ा-बहुत पढ़ पाते हैं। उसमें भी उन्होंने जो पढ़ा उसे समझाने या बताने के लिए कहें तो नहीं बता पाते हैं। कुल मिलाकर कक्षा में बच्चों के एक बड़े समूह को पढ़ने और लिखने में काफ़ी मुश्किल हो रही है और यह सभी विषयों में है।

चर्चा के इस अंश में यह तो समझ आया कि कक्षा के सभी बच्चों को पढ़ने में मुश्किलें हैं। यहाँ शिक्षक के सामने चुनौती है कि बच्चों को पढ़ना व लिखना तक नहीं आता और पहाड़ जैसा पाठ्यक्रम है जिसे उन्हें समझना है। इसमें गणित और विज्ञान जैसे विषयों में कुछ बुनियादी अवधारणाएँ भी हैं और यदि बच्चे उन्हें नहीं जानते तो इस कक्षा की विषयवस्तु को भी नहीं समझ पाएँगे।

इस चुनौती पर चर्चा करते हुए इस बात को केन्द्र में रखा कि;

- किसी पाठ को पढ़ाने का आधार और पढ़ाने के बाद बच्चे क्या सीख पाए, यह कैसे तय करते हैं?
- पाठ या अध्याय को पढ़ाने का आधार सीखने के प्रतिफल होते हैं और परिणाम भी सीखने के प्रतिफल पर निर्भर होता है।

विषय के अनुरूप उसके सीखने के प्रतिफल भी कौशल-केन्द्रित होते हैं। प्राथमिक रूप से

पढ़ना और लिखना सिखाने की ज़िम्मेदारी भाषा की है और वो भी शुरुआती कक्षाओं में। पूर्व माध्यमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण का उद्देश्य पढ़ना-लिखना सिखाने से बढ़कर साहित्य का अध्ययन और अध्यापन हो जाता है। ऐसे में जो बच्चे प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ना-लिखना नहीं सीख पाए हैं वो कहीं दूर छूट जाते हैं।

माध्यमिक कक्षाओं में अन्य विषयों की समझ भी पढ़ने और लिखने के कौशल पर ही निर्भर करती है। इन कक्षाओं में केवल मौखिक समझ मात्र से बात नहीं बनती। ऐसे में क्या हम उस विषय के सीखने के प्रतिफल के साथ-साथ उसमें भाषा शिक्षण के एक बुनियादी प्रतिफल को जोड़ सकते हैं जिसका अध्यापन शिक्षक करा रहे हों। मसलन, सामाजिक विज्ञान और विज्ञान को पढ़ाते समय आप तथ्यों की विभिन्न स्रोतों से जाँच-परख करने की बात करते हैं। उसके साथ हम छात्रों से चर्चा में आ रहे सरल वाक्यों को लिखने की बात कर सकते हैं। शुरुआत में तो हमें शायद स्वयं ही लिखना शुरू करना होगा। छोटी-छोटी बातें बच्चों से भी लिखवा सकते है। 'लिखने में पढ़ना शामिल होता है', इस बात को समझते हुए उनके लिखे को तुरन्त ठीक करने का प्रयास न करें। उन्होंने जो लिखा उसके बग़ल में सही शब्द या वाक्य लिखकर उन्हें दिखा सकते हैं।

चित्र : प्रशांत सोनी

कुछ और नए तरीक़े

पढ़ने-लिखने के कौशल अधिक गहरे होते हैं तो हम थोड़ा-बहुत पढ़ने-लिखने पर काम करके कक्षा से नहीं जा सकते। हमें कक्षा में शिक्षण के कुछ और तरीक़े अपनाने होंगे। इसके लिए अपनी कक्षा के बच्चों को कुछ डिब्बों या श्रेणियों में देखना होगा। बच्चों के वर्तमान सीखने के स्तरों को शिक्षक साथियों ने ही समझाया।

- ऐसे बच्चे जो बहुत अच्छे से पढ़कर समझ सकते हैं।
- ऐसे बच्चे जो थोड़ी मेहनत करके पढ़ तो लेते हैं पर पढ़े हुए को समझ नहीं पाते।
- ऐसे बच्चे जो पढ़ने से डरते हैं, जी चुराते हैं और कक्षा में छुपने की कोशिश करते हैं।

अपने बच्चों को चिह्नित करें और अध्याय के शिक्षण से पहले सीखने के इन तीनों स्तरों के अनुरूप अपनी योजना बनाएँ। जैसे– यह प्रक्रिया कुछ विषयों के साथ सम्भव नहीं है। मसलन, गणित और अँग्रेज़ी में तो इसके लिए ज़्यादा परेशान न होते हुए इसे केवल सामाजिक अध्ययन और विज्ञान विषयों के अध्यापन में शामिल किया जाए तो बच्चों में भाषा पढ़ने और लिखने की दक्षता बढ़ने लगेगी।

स्तर	कक्षा में किया जाने वाला काम	
जो बहुत अच्छे से पढ़कर समझ सकते हैं।	उनसे पाठ को पढ़वाएँ।	पढ़ी हुई सामग्री का सारांश लिखने के लिए कहें।
जो थोड़ी मेहनत करके पढ़ तो लेते हैं पर पढ़े हुए को समझ नहीं पाते।	पढ़े हुए अंश को अपने शब्दों में कहने के लिए कहें।	पढ़े हुए अंश में आए चयनित शब्दों का उपयोग किन वाक्यों में हुआ है, उन्हें पाठ में खोजकर रेखांकित करने के लिए कहें।
जो पढ़ने से डरते हैं, जी चुराते हैं और कक्षा में छुपने की कोशिश करते हैं।	पढ़े हुए अंश को अपने शब्दों में कहने के लिए कहें।	चयनित शब्दों में किन ध्वनि संकेतों का उपयोग हुआ है? इस पाठ में इन ध्वनि संकेतों के और कौन-से शब्द आए हैं? ऐसे प्रश्नों के साथ थोड़ा काम किया जा सकता है।

इस प्रक्रिया को एक बार कक्षा में हर अध्याय के साथ शुरुआती अनुच्छेद के साथ कर सकते है, बाक़ी का पाठ विषय-केन्द्रित सीखने के प्रतिफलों को केन्द्र में रखकर कर सकते हैं। इससे बच्चों के अन्दर भी सीखने का आत्मविश्वास बढ़ेगा।

पढ़ने और लिखने को विविधता भरा बनाने की ज़रूरत है

केवल पढ़ना और लिखना ही क्यों, कोई भी कौशल नियमित तौर पर अलग-अलग तरीक़ों से करते रहने से आता ही है। पढ़ना सीखने के लिए पाठ्यपुस्तक के साथ-साथ हमें अपनी कक्षाओं में कुछ पोस्टर और समाचार-पत्र के विज्ञापनों पर बात करते हुए पढ़ने और लिखने की विषयवस्तु की विविधता को बढ़ाना होगा, जिससे बच्चों में उत्साह, रोचकता व जिज्ञासा बढ़ती है। बच्चों के जीवन के विभिन्न मुद्दों को केन्द्र में रखकर भी कक्षा में चर्चा कर सकते हैं। व्हॉट्सएप में उन्हें क्या देखना अच्छा लगता है, क्या वे किसी मैसेज को पढ़ पाते हैं, वे स्वयं मैसेज कैसे लिखते हैं, आदि पर चर्चा कर सकते हैं। पढ़ना और लिखना सीखने को उनकी ज़रूरत बनाएँ। उन्हें जितना भी पढ़ना-लिखना आता है उसी के आधार पर पोस्टर बनवाएँ। सीखने के प्रयास में जुटे बच्चों की छोटी-से-छोटी उपलब्धि उनसे साझा करें। साथ ही इस काम में लगे रहने के लिए हर छोटी सफलता पर हमें ख़ुद को भी शाबाशी देना चाहिए। किसी बच्चे को पढ़ना सिखाने के लिए आपने जो तरीक़ा अपनाया उसे अपने साथियों से साझा करना चाहिए। बहुत सारी व्यवस्थाओं के बीच काम करना बहुत आसान है लेकिन कम संसाधन, सीखने की कम इच्छाशक्ति और बिना किसी प्रेरणा के माहौल में बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाना ओलम्पिक में पदक जीतने के बराबर है।

श्रीदेवी ने पण्डित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर से साहित्य और अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की है। पिछले पन्द्रह वर्षों से प्राथमिक शिक्षा में भाषा शिक्षण के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। प्रमुख रूप से शिक्षक-शिक्षा, बाल साहित्य, और प्रारम्भिक साक्षरता में रुचि है। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, रायपुर (छत्तीसगढ़) में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : sreedevi@azimpremjifoundation.org